International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 06 June- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जैन आचार्य अकलंक देव की जीवनी

Vikram Jeet singh, Associate Professor
Department of History
Government College for Women, Sirsa, Haryana

आचार्य अकलंक देव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व आठवीं शताब्दी में दक्षिण भारत में महान जैनाचार्य अकलंक देव का जन्म हुआ। इस समय विभिन्न दर्शन एक-दूसरे का खण्डन कर रहे थे। ऐसे समय में आचार्य अकलंक देव ने आचार्य पूज्यपाद व उमास्वामी की दार्शनिक परम्परा में आगम सम्बन्धी परिभाषाओं का दार्शनिक विश्लेषण कर अकलंक न्याय का मार्ग प्रशस्त किया तथा जैन-दर्शन पर अनेक ग्रन्थों जैसे तत्त्वार्थवार्तिक , अष्टशती न्यायविनिश्चय, प्रमाण-संग्रह आदि की रचना कर जैन दर्शन को अद्वितीय बना दिया।

जीवनी

सबसे पहले अकलंक देव की जीवनी प्रभाचन्द्र के गद्यकथाकोश [1] होती है। कथाकोश की अन्तिम प्रशस्ति से प्रकट होता है कि ये वही प्रभाचन्द्र हैं , जिन्होने न्यायकुमुदचन्द्र और प्रमेयकमलमार्तण्ड की रचना की। प्रभाचन्द्र का समय 980-1065 ईस्वी निश्चित किया जाता हैं और इन्होने जयसिंहदेव के (1055 ईस्वी) राज्य में कथाकोश की रचना की होगी। इसी गद्यकथाकोश को पद्य में ब्रह्मचारी नेमिदत्त ने वि.सं. 1575 के आसपास परिवर्तित किया था। इसके अतिरिक्त अकलंक देव की जीवनकथा स्वयं उनके ग्रन्थों में अथवा समकालीन या उत्तरवर्ती ग्रन्थों में भी नहीं पाई गई है। कन्नड़ी भाषा के राजावलीकथे में जो देवचन्द्र की 16वीं सदी के बाद की रचना है , उसमें अवश्य अकलंक देव की कथा मिलती है। मूलग्रन्थ प्रभाचन्द्र के गद्यकथाकोश में अकलंक देव की जीवन-गाथा इस प्रकार वर्णित है। "मान्यखेत नगर के राजा प्रभुतुंग के मन्त्री का नाम पुरूषोत्तम था , जिनके दो पुत्र थे एक का नाम

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 06 June- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अकलंक दूसरे का निकलंक था। एक बार अष्टाह्निका पर्व पर अकलंक व निकलंक अपने पिता पुरूषोत्तम के साथ जैन गुरू रविगुप्त के पास गये । यहाँ माता-पिता के साथ बालकों ने भी ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। किन्तु बालको ने बड़े होने पर ब्रह्मचर्य व्रत को आजीवन मानकर विवाह से मना कर दिया। पुरूषोत्तम ने पुत्रो को समझाया किन्तु दोनों अपनी बात पर अडिग रहे तथा आजीवन ब्रह्मचारी रह कर शास्त्राभ्यास में लगे रहे। किन्तु बौद्धो द्वारा जैन धर्म पर आक्षेपो से दोनो विचलित थे और प्रतीकारार्थ धर्म छिपाकर बौद्ध मठ में विद्याध्ययन करने लगे। एक बार अकलंक ने अनेकान्त खण्डन के पूर्वपक्ष की पाठ-शुद्धी की, जिससे मठवासियों को सन्देह हुआ कि मठ में कोई जैन- धर्मी भी है। इसी सन्दर्भ मे जांच हेतु गुरू ने शिष्यों को जैन मूर्ति लांघने की आज्ञा दी। अकलंक ने मूर्ति पर धागा डाल लांघ कर भेद प्रकट नहीं होने दिया। इसी क्रम मे एक रात गुरू ने कांसे के बर्तनो को छत पर गिराया। इस तेज आवाज से सभी शिष्य जाग उठे और अपने इष्ट का स्मरण करने लगे। परन्तु अकलंक के मुख से 'णमो- अरहंताणम' आदि पंच नमस्कार मंत्र निकल गया और इस आधार पर दोनों भाइयों का भेद प्रकट हो गया और दोनों को मठ में ही कैद कर लिया गया परन्तु दोनों भाई केंद से भाग निकले। भागते समय निकलंक ने बड़े भाई अकलंक से मे छिपकर प्राण बचाइये। दुःखी मन से अकलंक तालाब मे छिप गये। निकलंक को भागते देख एक धोबी भी अज्ञात भय से भागने लगा और पीछे आते हुए घुडसवारों ने दोनों को मौत के घाट उतार दिया। बाद में अकलंक देव कलिंग देश के रत्नसंचयपुर पहुंचे। वहाँ हिमशीतल राजा की रानी मदनसुन्दरी अष्टाह्निका पर्व पर जैन रथयात्रा निकालना चाहती थी। किन्तु बौद्धगुरू संघश्री के कहने पर राजा ने शर्त रखी कि यदि कोई जैनगुरू , बौद्धगुरू को शास्त्रार्थ में हरा दे तो जैन रथयात्रा निकाली जा सकती है इस शर्त पर रानी चिन्तित हुई। इस परिस्थिति मे अकलंक देव सामने आये और राजा हिमशीतल की सभा में शास्त्रार्थ हुआ। बौद्ध गुरू संघश्री बीच मे पर्दा डालकर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 06 June- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शास्त्रार्थ करते रहे। छह माह बीत गये परन्तु कोई न जीत पाया। एक रात्री चक्रेश्वरी देवी ने अकलंक देव को रहस्य बताया कि पर्दे के पीछे से घट मे बैठी तारा देवी शास्त्रार्थ कर रही है। तुम प्रातः काल कहे गये वाक्यों को पुनः पूछना , इसी से उसकी पराजय हो जायेगी। अगले दिन प्रातः कहे गये वाक्यों को दुहराने को कहा पर उत्तर नहीं मिला। अकलंक देव ने पर्दा खींच कर घट को पैर से फोड़ डाला। तारादेवी भाग गई , बौद्ध गुरु पराजित हुए। जैन रथ निकाला गया और जैनधर्म का महत्व बढ़ा। देवचन्द्र की राजावलिकथे में भी यह कथा कुछ भिन्नता के साथ मिलती है। भिन्नता यह है कि बौद्धों ने राजा हिमशीतल की सभा में जैनों से शास्त्रार्थ इस शर्त पर किया कि हारने पर उस सम्प्रदाय के सभी मनुष्य कोल्हू में पेलवा दिये। जाये। शास्त्रार्थ 17 दिनों तक चला , कुसुमाण्डिनी देवी ने अकलंक देव को स्वप्न में विजय का रहस्य बताया। उन्हे प्रश्नों को प्रकारान्तरस उपस्थित करने को कहा। अकलंक देव ने वैसा ही किया और विजयी रहे। बौद्ध सिलोन प्रस्थान कर गये। मल्लिषेण-प्रशस्ति के दूसरे पद्य में वर्णित है कि राष्ट्रकूट नरेश साहसतुंग के दरबार में अकलंक देव ने सम्पूर्ण बौद्ध विद्वानों को पराजित किया। कांची के पल्लववंशी राजा हिमशीतल के दरबार में भी अकलंक देव ने विजय प्राप्त की। कई तथ्यों के आधार पर राइस ने अकलंक देव का वृत्तान्त इस प्रकार दिया है कि जब बौद्धों ने जैन धर्म का विकास अवरूद्ध कर दिया , तब जिनदास नामक जैन छादम की पत्नी जिनमती से दो बालक अकलंक व निकलंक पैदा हुए। जैन गुरु उपलब्ध न होने पर इन्होंने रूप से भगवदास नामक बौद्ध गुरू से पढ़वाना शुरू किया। किन्तु बालकों की प्रतिभा से गुरू को सन्देह हो गया। भेद मालूम करने के लिए गुरु ने एक रात्रि इनकी छाती पर बुद्ध का दांत रख दिया। अचानक बालक जिनसिद्ध कहते हुए जागे। जिससे भेद प्रकट हो गया। एक अन्य कथा के अनुसार शिष्य बालको ने "सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः" का लेखन किया जिसके कारण भेद प्रकट हो गया। शेष कथा की घटनायें भागना , एक भाई का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 06 June- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पकड़ा जाना आदि लगभग सभी कथाओ मे साम्यता रखता है। इसके अतिरिक्त बौद्ध व जैन धर्म की द्वैषता का वर्णन भी लगभग सभी कथाओं मे हुआ है। चन्द्रप्रभसूरी कृत प्रभावक चरित ईस्वी 1277 मे दो भाइयों इंस , परमहंस की कथा इस प्रकार वर्णित है।" [2] "हंस और परमहंस नामक दो भाई हरिभद्रसूरी के शिष्य थे। ये दोनों सुगतपुर मे बौद्ध शास्त्रो का अध्ययन करने हेतु एक मठ में गये। उन्होंने जिनमत के खंडन का प्रतिखण्डन एक पत्र पर लिख रखा था। पत्र हवा से उड़ कर बौद्ध गुरु के पास पहुँच गया। जिससे उन्हें इनके जैन होने का सन्देह हुआ। भेद मालूम करने के लिए गुरू ने जिनबिम्ब का चित्र मार्ग बनवा कर उसे लांघने हेतु कहा ! जीवन का संकट जान दोनों भाईयों ने खडिया से प्रतिमा के हृदय पर यज्ञोपवीत का चिन्ह बना दिया तथा उसे बुद्ध प्रतिमा मान कर लांघ गये। परन्तु एक रात्रि सहसा बर्तन गिरने की आवाज से उठकर हंस परमहंस जिनदेव का स्मरण करने लगे और भेद प्रकट हो गया। बाद में बौद्धो की देवी के साथ शास्त्रार्थ हुआ। जिसमें पूर्ववर्ती कथाओं की तरह पर्दा खींचने व घट फोड़ने का उल्लेख है। साथ ही शेष कथाओं में दोनों का भागना एक का मारा जाना , लगभग समान कथानक हमें मिलता है। यहाँ प्राथमिक समानता में बौद्ध व जैन धर्म की द्वैषता जरूर दिखाई देती है राजशेखर सूरी के चतुर्विंशतिप्रबन्ध (1348 ईस्वी) *[3] मे भी हंस परमहंस की कथा मिलती है। किन्तु कुछ अन्तर अवश्य आता है। उपर्युक्त अन्तर इतिहास की घटनाओ में समय के साथ आ रहा है। प्रायः ऐतिहासिक तथ्यों में समय के साथ ऐसे परिवर्तन देखे गये हैं। फिर भी मूल कथानक व कई तथ्य समान रहे है। समान तथ्यों मे राजा 'शुभतुंग' का उल्लेख महत्वपूर्ण है और जैसा कि ऐतिहासिक तथ्यों से प्रकट होता है कि राष्ट्रकूट वंशीय कृष्ण प्रथम की उपाधि 'शुभतुंग थी तथा राष्ट्रकूटो की राजधानी मान्यखेत' थी। जहां तक शुभतुंग के मन्त्री पुरुषोत्तम का प्रश्न है तो निश्चय ही किसी ऐतिहासिक तथ्य के अभाव में इसे ऐतिहासिक तो साबित नहीं किया जा सकता। परन्तु फिर भी अकलंक देव

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 06 June- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मन्त्री पुत्र स्वीकार किये जा सकते है। जिसका प्रमाण न होना कोई अनहोनी घटना नही है। इसी प्रकार उपर्युक्त कथाओ में वर्णित कलिंगाधिपति हिमशीतल का भी कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। डॉ. ज्योतिप्रसाद ने हालांकि अकलंक चरित में उल्लेखित 700 संवत् को विक्रम संवत् 700 मानकर 643 ईस्वी के आस-पास नगहुषराज महाभवगुप्त चतुर्थ को हिमशीतल माना है। जो अकलंक देव को 720 ईस्वी – 780 ईस्वी मानने पर गलत सिद्ध हो जाता है। यहाँ निकलंक का प्रश्न भी विचारणीय हो जाता है। किसी भी शिलालेख या ग्रन्थ में निकलंक का उल्लेख नहीं मिलता जो निकलक की ऐतिहासिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। स्वयं अकलंक देव द्वारा निकलंक का उल्लेख न किया जाना इसे और भी सन्देह मे ले आता है। लेकिन तत्वार्थवार्तिक नृपतिवरतनय से यदि अकलंक को वरतनय-ज्येष्ठ पुत्र माना जाये तो अवश्य उनके लघुभ्राता की सूचना मिलती है।

संदर्भ सूची

1. प्रभाचन्द्र गधकथाकोश, अनुवादक-बलदेव उपाध्याय , प्रकाशक चोखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1978 पृ.सं. 3-8
2. प्रभाचन्द्र न्यायकुमुदचन्द, पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री , भाग प्रकाशक ज्ञानपीठ प्रकाशन काशी, 1967, पृ.सं. 3-8
3. प्रभाचन्द्र ज्ञानपीठ प्रकाशन काशी, 1967, पृ.सं. 32